✺ 11 अक्तुबर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] शान्ति और सुख मिलता है एक बाप से, क्योंकि वह सुख और शान्ति का सागर है। वह चीज़ ही मुख्य है। शान्ति को मुक्ति भी कहा जाता है और फिर जीवनमुक्ति और जीवन बन्ध भी है। अभी तुम जीवनबन्ध से जीवनमुक्त हो रहे हो। सतयुग में कोई बन्धन नहीं होता है। गाया भी जाता है सहज जीवनमुक्ति वा सहज गति-सद्गति। अब दोनों का अर्थ तुम बच्चों ने समझा है। गति कहा जाता है शान्तिधाम को, सद्गति कहा जाता है सुखधाम को।

2] तुम आत्मा हो परन्तु तुमको ज्ञान सागर, सुख का सागर, शान्ति का सागर नहीं कहा जाता। यह महिमा एक ही बाप की है जो तुमको ऐसा बनाते हैं। बाप की यह महिमा सदैव के लिए है। सदैव वह पवित्र है और निराकार है। सिर्फ थोड़े समय के लिए आते हैं पावन बनाने। सर्वव्यापी की तो बात ही नहीं। तुम जानते हो बाप सदैव वहाँ ही रहते हैं। भक्ति मार्ग में सदैव उनको याद करते हैं। सतयुग में तो याद करने की दरकार नहीं रहती है। रावण राज्य में तुम्हारा चिल्लाना शुरू होता है, वही आकर सुख-शान्ति देते हैं। तो फिर जरूर अशान्ति में उनकी याद आती है। बाप समझाते हैं हर 5 हज़ार वर्ष बाद मैं आता हूँ। आधाकल्प है सुख, आधाकल्प है दु:ख। आधाकल्प के बाद ही रावण राज्य शुरू होता है।

3] तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय, जो ईश्वर की राय पर चलते हो। वही फिर ईश्वरीय सम्प्रदाय से दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सम्प्रदाय बनेंगे। अभी हम सो ब्राह्मण हैं फिर हम सो देवता, हम सो क्षत्रिय..... हम सो का अर्थ देखो कितना अच्छा है। यह बाजोली का खेल है जिनको समझना बहुत सहज है।

4] कई बच्चे दूसरों के देखकर स्वयं अलबेले हो जाते हैं। सोचते हैं ये तो होता ही है..... चलता ही है..... क्या एक ने ठोकर खाई तो उसे देखकर अलबेलेपन में आकर खुद भी ठोकर खाना- यह समझदारी है ? बापदादा को रहम आता है कि ऐसे अलबेले रहने वालों के लिए पश्चाताप की घड़ियाँ कितनी कठिन होंगी, इसलिए समझदार बन अलबेलेपन की लहर को, दूसरों को देखने की लहर को मन से विदाई दो। औरों को नहीं देखो, बाप को देखो।

✺ योग-

1] बाप कहते हैं– बच्चे, शान्तिधाम घर को याद करो। आत्माओं को अपना घर भूला हुआ है। बाप आकर याद दिलाते हैं। समझाते हैं हे रूहानी बच्चों तुम घर जा नहीं सकते हो जब तक मुझे याद नहीं करेंगे। याद से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे। आत्मा पवित्र बन फिर अपने घर जायेगी।

2] बाकी सच्चा सोना तुम बनते हो इस योगबल से।

3] फिर गोल्ड एजड तख्त चाहिए तो जरूर पवित्र बनना पड़े इसलिए बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारी खाद निकल जायेगी। फिर तुमको ऐसा दैवी तख्त मिलेगा। अभी ब्राह्मण कुल का तख्त है। पुरूषोत्तम संगमयुग का तख्त है फिर मुझ आत्मा को यह देवताई तख्त मिलेगा।

✺ धारणा-

1] अब बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझो, देही अभिमानी बनो।

2] मूल बात बाप समझाते हैं– बच्चे, याद की यात्रा में रहो। गीता में भी मनमनाभव अक्षर है परन्तु बाप कोई संस्कृत तो नहीं बतलाते हैं। बाप मनमनाभव का अर्थ बताते हैं। देह के सब धर्म छोड़ अपने को आत्मा निश्चय करो।

3] मुख्य बात बाप ने इशारा दिया है– गृहस्थ व्यवहार में रहते मामेकम् याद करो। 8 घण्टा याद में रहने का अभ्यास करो। याद करते-करते आखरीन पवित्र बन बाप के पास चले जायेंगे तो स्कॉलरशिप भी मिलेगी। पाप अगर रह जायेंगे तो फिर जन्म लेना पड़े। सजायें खाते हैं फिर पद भी कम हो पड़ता है। हिसाब-किताब चुक्तू तो सबको करना है।

✺ सेवा-

1] वारिस क्वालिटी तैयार करो तब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा।